महिला आत्मकथा लेखन मे नारी संघर्ष की आत्माभिव्यक्ति

विद्यादेवी पटेल,

शोध छात्रा,
क्राइस्ट चर्च पी0 जी0 कालेज कानपुर

नारी संवेदनाओं की मूर्ति होती है, इसलिए वह जीवन की पारखी भी होती है। जीवन की सूक्ष्मतम संवेदनाओं को भी वह तीव्रतम रुप में ग्रहण करती है। और अपनी भावनाओं को अनेक सुन्दर रंगों में व्यक्त करती है। वह पुरुष से सर्वथा अलग एक संसार में जीती है, परिणामतः उसके बहिरंग व्यक्तित्व पर भी अंतरंग हमेशा हावी रहता है और उसकेव्यक्तित्व एवं परिवेश में एक समानांतर दूरी हमेशा बनी रहती है। स्त्री अगर अपने परिवारिक रुप से हटकर अपना कोई अस्तित्व तलाशती है तो उसे अलग अलग प्रकार की प्रतिक्रिया मिलती है। भारतीय समाज, नारी के परिवर्तन के प्रयासों को संस्कृति का अवमूल्यन मानकर बराबर खारिज करता आया है और आज भी कर रहा है। इस प्रकार परिवेशगत असामान्जस्य के कारण बहुत बार उसका व्यक्तित्व हाशिये पर चला जाता है और नारी अपनी अस्मिता एवं आत्माभिव्यक्ति के लिए सतत् संघर्षरत् रही है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही देशभर मे जो शिक्षा का प्रचार और प्रसार हुआ, उसने नारी को चेतना और शक्ति प्रदान की। स्त्रियों ने पुरुष सत्तात्मक समाज को चुनौती देते हुएअपने अस्तित्व एवं स्वाभिमान के बारे में स्वयं सोचना शुरु कर दिया और अपनी अनुभूतियों एवं आन्तरिक द्वन्द को बहुत बार फलक पर उतारा है। ग्रामीण निरक्षर साधन विहीन स्त्री अपनी अनुभूति को लोकगीतों–लोककथाओ में या फिर घर आँगन के कैनवास पर अभि व्यक्ति करती है तो शिक्षित एवं लेखनी समर्थ कवयित्री या कथाकार अपनी रचनाओं में अपनी भावनाओं को विस्तार देती है वर्तमान समय में यह जीवनानुभूति आत्मकथाओं के माध्यम से और सशक्त दवं प्रामाणिक रुप से उभर कर आयी है।

हिन्दी साहित्य में महिला आत्मकथालेखन 20वीं सदीं के अंत सं हुआ है। जिस हिन्दी साहित्य में महिला आत्मलेखन की परंपरा का नितांत अभाव को वहाँ अब महिला साहित्यकारों की एक के बाद एक आत्मकथाओं का प्रकाश में आना संकेत करता है कि अब महिलाओं पर सामाजिकव्यवस्था के बंधन शिथिल हुए है। साहित्य में उभरे 'नारी–विमर्श' के माध्यम से नारी को अपने अनुभवों को व्यक्त करने की आजादी मिली है। इसलिए अनेक लेखिकाओं ने अपनी–अपनी आत्मकथा लिखी है।

इस दौर में जो प्रमुख आत्मकथायें रहीं, उनमें कुसुम अंसल की जो कहा नही गया, मैत्रेयी पुष्पा की कस्तूरी कुण्डल बसै, गुड़िया भीतर गुड़िया, प्रभाखेतान की अन्या से अनन्या, रमाणिका गुप्ता की हादसे, कृष्णा अग्निहोत्री की– लगता नहीं है दिल मेरा, मन्नू भण्डारी की एक कहानी यह भी सुशीला टाकभौरे की– शिकंजे का दर्द, कौसल्या बैंसंत्री की दोहरा अभ्शिाप, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की पिंजड़े की मैना।

आलोच्य आत्मकथाएँ नारी संघर्ष की कड़ी बनकर सामने उभरती है । आत्मकथाओं में नारी के विविध संघर्षों को चेतना के स्तर पर चित्रित करने में, नारी संघर्ष के मनोवृत्तियों को उभारने में आत्मकथा लेखिकाएँ सफल रही है। इन आत्मकथाओं में जो संघर्ष छिड़ चुका है वह बौद्धिक संघर्ष है। बल्कि पुरुषों द्वारा स्त्रियों के

दबाए हुए अधिकार वापस लेने का संघर्ष है। महिला आत्मकथाकारों का यह संघर्ष समाज को प्रतिबिम्बित करता हुआ व्यापकता और परिणाम के साथ उसी समाज को आइना दिखाता है।

इन आत्मकथाओं में सिर्फ लेखिकाओं के निजी जीवन का व्यौरा माात्र नहीं है, बल्कि ये नारी के मनाविज्ञान को समझने में भी सहायक है।नारी के अंतर्जत और वाह्य परिवेश के मध्य अंतस्संबन्धों पर ये प्रकाश डालती है। अपनी आत्मकथाओं के माध्यम से नारियों ने सदियों से चली आ रही स्वत्वहीनता के मौन को तोड़ा है तथा अपनी खामोशी को गहरे मानवीय अर्थ दिये है। साथ ही कैसे एक स्त्री का व्यक्तित्व दआकार लेता है, कैसे नारी का शोषण हर स्तर पर किया जिसके खिलाफ उन्हें संघर्ष करना पड़ा और आत्मनिर्भरता की ओर वे किस सजगता से सधे कदमों से बढ़ती है और अपने अस्तित्व कीझलक किस प्रकार पूरी दुनिया को दिखाती है का पूरा वृतान्त इन आत्मकथाओं में है।

एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भण्डारी का समूचा जीवन संघर्ष से युक्त है। जिससे विवाह के लिये इतनासंघर्ष किया उसी व्यक्ति ने विवाहेत्तर जीवन का एक एक पल मन्नू को संघर्ष के लिए रचा। आत्मकथा मानों स्त्री संघर्ष की कहानी है। वे लिखती है 'उस समय मुझे लगता था कि राजेन्द्र से विवाह करते ही लेखन के लिए तो जैसे राजमार्ग खुल जाएगा और उस समय यही मेरा मात्र काम्य था। उस समय कैसे मैं भूल गई कि शादी करते ही मेरे व्यक्तित्व के दो हिस्से हो जाएगें– लेखक और पत्नी।

मन्नू जी की सारी उम्मीदें हिममारे कमल के पत्तों की भॉति एक –एक कर बिखरती गयी। पुरुष के कई रुप होते हैं जो समय–समय पर बाहर आते–जाते हैपरिवार की सेवा उसकी तीमारदारी का दण्ड स्त्री को निश्चित रुप से मिलता है। यही दण्ड मन्नू भण्डारी को मिला। राजेन्द्र जी मन्नू जी कहते है कि ,'देखो, छत जरुर हमारी एक होगी। लकिन जिन्दगियाँ अपनी–अपनी होगीं। बिना एक दूसरे की जिन्दगी में हस्तक्षेप किए बिल्कुलस्वतंत्र, मुक्त, और अलग।'मन्नू के जीवन का यही यथार्थ था, यही पारिवारिक जीवन संघर्षों का सत्य भी।

महिला आत्मकथायें महिलाओं के संघर्ष की व्यथा के साथ–साथ उनके हौसलों की उड़ान भी है। हादसे में रमणिका गुप्ता ने भी तो संघर्ष का ही चुनाव किया। रमणिका ने सॅभलती उम्र के साथ अपना संघर्ष शुरु किया। वे अपनी संघर्ष व्यथा लिखती हैं , '' मैने उससे लाठी के दो–तीन वारों का मुकाबला किया पर फिर एक लाठी मेरी कलाई पर लगी। लाठी मेरे हाथ से गिर गई। हॉथ की हड्डी टूट गयी थी। एक भाला सरसराता मेरी आँख तक पहुँच गया''। जीवन का ऐसा यथार्थ संघर्ष जिसने किया हो , वह भला किसी भी संघर्ष से कैसे दूर रह सकती है। विवाह जैसे महत्वपूर्ण मसले को लेकर भी उन्हें संघर्ष करना पड़ा वे कहती है, '' यह निर्णायक घड़ी थी। मैं ना अड़ती तो शयद मेरी जिन्दगी कहीं गुम हो गई होती और जो मैं कहना चाहती थी, करना चाहती थी न कर पाती।'' ऐसे जुझारु व्यक्तित्व की धनी महिला कथाकारों से सामान्य स्त्री प्रेरणा लेकर निश्चित रुप से अपनी विशिष्ट पहचान बना सकती है। भारत का संविधान सभी भारतीय नारियों को समान अधिकार, समान अवसर, समान सुविधाएँ और सम्मान उपलब्ध कराने, महिलाओं को गरिमापूर्ण स्थिति और सुरक्षित जीवन का प्रावधान करता है, परन्तु भारतीय नारी का यह दुर्भाग्य है कि आजादी के बाद से लेकर अब तक उसके जीवन की सुरक्षा कागजों में ही सिमट कर रह गयी। पिछले दो दशकों में समाज में परिस्थितियों में बदलाव नजर आ रहा है अब स्त्री की दशा, उसकी दमित इच्छाओं, स्वतंत्रता, अधिकार जैसे अब तक अछूत समझे जाने वाले क्षेत्रों पर काफी ध्यान दिया और स्त्री को सुरक्षा तथा अधिकार प्रदान करने के

लिये सरकार द्वारा नये–नये कानून बनाये गये हैं। इसके बावजूद आज महिलाओं का हर स्तर पर शोषण ओर उत्पीड़न बढ़ता ही जा रहा है।

नारी का उत्पीड़न कैसे संवेदना के स्तर पर होता आया है कैसे नारी ने संवेदना के स्तर पर ही अपना होना सिद्ध किया है के प्रमाण यह महिला आत्मकथायें हैं। उम्पीड़न के अन्तर्गत नारी का शोषण दैहिक, आर्थिक, शैक्षिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, स्तरों पर किया जाता है। आत्मकथाओं में शोषण उत्पीड़न के उपरान्त संघर्ष इस कदर दृढ़ता से हुआ है कि लेखिकायें सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्ति का मार्ग ढूँढ़ने में कामयाब रही। शिकंजे का दर्द की लेखिका सुशीला टाकभौंरे कामकाजी नारी है। वे पैसा कमाती तो है परन्तु उनपर पूरा नियंत्रण पति का है। दिनभर कमरतोड़ मेहनत करना साथ ही पढ़ाई फिर नौकरी करते– करते घर का काम फिर बच्चे और फिर पति की मार–पीट सास, ननद के ताने, बच्चों की जिम्मेदारी इनसब के बीच सुशीला पिस जाती है।ये संघर्ष ही है जो लेखिका को इतनी ऊँचाई तक जाने में सहायक हुए हैं, सारी तकलीफें सहकर स्त्री अपने लिए नया रास्ता ढूँढ़ निकालती है।

नारी अपने अधिकारों कि प्राप्ति के लिए संघर्षरत है यही नारी संघर्ष ''दोहरा अभिशाप'' में लेखिका ने तीन पीढ़ियों का संघर्ष प्रस्तुत किया है। लेखिका की आजी माँ और स्वयं लेखिका को अपना जीवन पूर्णरुपेण संघर्षपूर्ण स्थिति में बिताना पड़ा। दलितों में स्त्री को दोहरे शोषण से संघर्ष करना पड़ता है। कौसल्या दलित होने के साथ गरीब भी है अतः इस अवस्था में लेखिका का शोषण हद से अधिक बढ़ जाता है। और लेखिका जीवनभर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिएसंघर्ष करती है। पारंपारिक विवाह संस्था तथा प्रेमविवाह भी नारी को सुखी होने की गारण्टी नही दे सकते। विवाह कर सुखी जीवन जीने की कामना करने वाली स्त्री हो या अविवाहित रह अपना जीवन बिताने वाली स्त्री हो दोंनो का हश्र समान है। उनकी नियति उन्हें पुरुष से मिलने वाले धोखे से बार–बार टकराती है परन्तु आर्थिक आत्मनिर्भरता, संघर्ष, सजगता, अस्मिता, सम्मान, शिक्षा इन बिन्दुओं को सम्मुख रख आत्मकथा लेखिकाओं ने नारी सशक्तिकरण का आन्दोलन अपने दृढ़ संकल्प एवं उर्जाशक्ति, आत्मविश्वास तथा बुद्धिकौशल्य के बल पर खड़ा किया है। प्रभाखेतान ने ''अन्या से अनन्या'' में जीवन के जो व्यौरे दिये है। उनसे यही स्पष्ट होता है कि प्रभा का सम्पूर्ण जीवन एक लंबा संघर्ष रहा है। बचपन, यौवन, प्रौढ़त्व तीनों ही पड़ावों पर प्रभा को आजीवन संघर्ष से जूझना पड़ा है।

डाक्टर प्रभा का आजीवन शोषण करते रहे और प्रभा इस शोषण के खिलाफ संघर्ष करती रही। प्रभा के इस संघर्ष के सन्दर्भ में डॉ0 नीरु कहती हैं, '' समाज की बनी बनाई राहों से मुँह मोडकर अपने लिए एक नया रास्ता बनाने का जोखिम उठाती स्त्री को अपनी कहानी एक संवेदनशील अकेली स्त्री के अपने दृढ़ संकल्प और दुर्विचार हठ के बल पर क्रूर–जड़ समाज से जूझने की कहानी।''

भारतीय समाजिक ढाँचे में जहाँ एक ओर पुरुष मजबूती से जमा है वहीं दूसरी ओर नारी के डगमगाते अस्तित्व तथा कमजोर स्थिति के कारण यह ढाँचा ऊपर–नीचे हो चुका है। इसी सामाजिक ढ़ाँचे को सही ढंग से प्रगति पथ पर ले जाने के लिए महिला आत्मकथाकारों ने अपनी आत्मकथायें रची है। जिन्दगी के थपेडों से जूझती इन लेखिकाओं ने अपने– अपने रंग भरे है। अपने घरौदें का नवनिर्माण करते हुए इन्हें जिस संघर्ष से गुजरना पड़ा वो काबिले तारीफ है। कृष्णा अग्निहोत्री जो अत्याधिक कोमल हृदय है उन्हें आजीवन उन्ही के घर में प्रताड़ना मिलती है। लेखिका ने आत्मकथा '' लगता नहीं है दिल मेरा'' में अपने अस्तित्व के संघर्ष को बयान करते हुए लिखा है कि, '' इधर अस्तित्व की मेरी लड़ाई

भयानक थी।'' पति का घर छोड़ने के पश्चात् आर्थिक रुप से कृष्णा की मदद न ससुराल वालों ने की न ही मायके वालों ने कृष्णा लिखती है'', मैं समाज एवं परिवार से उपेक्षित अपनी जगह बना पाने का भीषण आग जुझारु जीवन जी रही थी। जिसे सामान्यतः किसी को भी नहीं जीना चाहिए।'' कृष्णा कभी भी पुरुषों के विरुद्ध नहीं खड़ी होती, वे स्वयं के सामाजिक ढाँचे को सुदृढ़ करने और अपने अस्तित्व को बनाए रखने की लड़ाई लड़ती रहीं। उनका सम्पूर्ण जीवन मानव मन की बारीकियों और गहन अन्तर्दशाओ को पहचानने में सफल रहीं लेखिका कुसुम अंसल ने अपने जीवन संघर्षों की कहानी जो कहा नहीं गया में विस्तृत फलक पर उकेरी है। लेखिका का संघर्ष बचपन में ही शुरु होता है। मध्यमवर्गीय पति के घर में भी घुटन और परम्पराओं के दरमियान जीती कुसुम का सुघर्ष महत्वपूर्ण है। कुसुम वैयक्तिक जीवन में संघर्षशील है और अपने इसी संघर्षशील है जीवन को वे अपने कार्यों द्वारा आनन्दमयी बनाने की कोशिश करती है।

आर्थिक पराधीनता नारी की सबसे बड़ी विवशता होती है इसी विवशता के कारण वह अपने आश्रयदाता के अनेक अत्याचारों को सहती है और इन अत्याचारों का जिक्र भी वह अपनों के पास नहीं कर सकती और यही पर उसे संघर्ष से दो हाथ करने पडते है। कुसुम इसी परवशता को तोड़ती हुई अपने मुकाम पर बड़े ही संघर्ष के साथ पहुँचती है। वे नाटकों मे हिस्सा लेती है लेखन करती है, स्कूलों का निर्माण कर उन्हें सुचारु रुप से चलाती है और अपने पैरों पर खड़ी होती है। अपने अपने बहाने लेखिका ने नारी जीवन की त्रासदी को उभारने की कोशिश करने वाली कुसुम ने पुरुष सत्ताक समाज में एक नारी किस प्रकार अपने स्वयं को बचाने कि कोशिश करती है, का चित्रण किया है। कुसुम आत्मकथा में अपने अनकहे की अनावृत्त करती है जिसे उन्होने बड़े ही संकेतात्मक नाम से अभिहित किया है '' जो कहा नहीं गया है''।

महिला रचनाओं की आत्मकथायें अधिकांश पुरुष रचनाओं की आत्मकथाओं की तरह मात्र अहं की संस्तुति और प्राप्त उपलब्धियों का नीरस ब्यौरा मात्र नहीं है बल्कि जीवन के विरोध पक्षों का समायोजन होता है,जिन्दगी के गहरे अनुभवों से रची बसी ये आत्मकथायें स्त्री जीवन के हाशियेकरण से उद्वेलित दिखती है। ये आत्मकथायें एक स्त्री की अदम्य साहस और जिजिविषा का प्रत्यक्ष दस्तावेज है कस्तूरी कुण्डल बसै की कस्तूरी भी अदम्य साहस और संघर्षशील महिला का जीताजागता उदाहरण है। जिस समय समूचा भारत स्वतंत्रता संग्राम में प्राणों की बाजी लगा रहा था उसी समय कस्तूरी अपने अपनों के विरुद्ध संघर्ष कर रही थी। उसने पितृसत्ता और सामन्ती वृत्ती के खिलाफ अपना संघर्ष निरन्तर बनाए रखा। छोटी सी बच्ची कस्तूरी ने माँ कस्तूरी का जीवन संघर्ष बचपन से बहुत नजदीक से देखा तथा तभी आत्मकथा में इतना सटीक वर्णन वे कर पायी है। आगे मैत्रेयी ने '' गुड़िया भीतर गुड़िया में अपना संघर्ष खेल कर रखा है विवाह–पति–बच्चे–गृहस्थी के चक्कर में फसी मैत्रेयी का संघर्ष जिन्दगी के हर मोड़ पर है।गाँव–देहात में रहने वाली युवती को शहर के सलीके सीखने के लिए जो जद्दोजहद और संघर्ष करना पड़ा अपने आप मे उपलब्धि है। आत्मकथा में मैत्रेयी ने अपने विगत जीनव की यातना, संघर्ष की स्मृतियों को व्यक्त करते–करते भारतीय पितृसत्तात्मक संस्कृति के परम्परावादी दृष्टिकोण पर पुराजोर प्रहार कर संघर्षशील स्त्री की दास्तान को व्यक्त किया है।

इस प्रकार महिला आत्मकथा लेखिकाओं का जीवन संघर्षों से युक्त दिखाई देता है। मृदु स्वभाव तथा प्राकृतिक कोमलता के कारएा स्त्री हमेशा से अपनी अभिव्यक्ति आँसुओं के माध्यम से व्यक्त करती आयी है। भावों की अभिव्यक्ति का आधार जब कलम बनी तब इन आँसुओं के सैलाब को स्त्रियों ने आत्मकथाओं का रुप दे दिया। प्रत्येक आत्मकथाओं में स्त्री पर होने वाले

अत्याचार तथा मानसिक, शारीरिक, उत्पीड़न का चित्रण भी कई स्तरों पर हुआ है। संघर्ष तो सभी आत्मकथाओं का मुख्य बिन्दु रहा है। और इस संघर्ष के बल पर ही सभी आत्मकथा नायिकाओं ने अपना रास्ता आत्मनिर्भरता की ओर मोड़ दिया। जिसके सहारे वे सजग हुई, अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए महिला आत्मकथाकारों का संघर्ष सफल रहा है।

संदर्भ सूची

1. डॉ0 मिश्र सरजू प्रसाद **2011** : हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ; अमन प्रकाशान;कानपुर; पृ030
2. नीरु **2009** : प्रतिरोध का दस्तावेज महिला आत्मकथाएँ; संजय प्रकाशन; नई दिल्ली; पृ0 85
3. डॉ दीक्षित दया **2013** : मैत्रेयी पुष्पा के कथामक आयाम; विकाश प्रकाशन कानपुर पृ0 13
4. खेतान प्रभा **2010** :अन्या से अनन्य राजकमल प्रकाशन;नई दिल्ली; पृ0 77
5. अग्निहोत्री कृष्णा **2010** :लगता नहीं है दिल मेरा; सामयिक बुक्स; नई दिल्ली; पृ0 99
6. अंसल कुसुम **2008** :जो कहा नहीं गया; रचनावली–6 नमन प्रकाशन;नई दिल्ली पृ० 171
7. बैसन्त्री कौसल्या **1999** :दोहरा अभिशाप;परमेश्वरी प्रकाशन;नई दिल्ली पृ० 160
8. टाकभौरे सुशीला **2011** : शिकंजे का दर्द;वाणी प्रकाशन;नई दिल्ली पृ० 143
9. भण्डारी मन्नू **2008** : एक कहानी यह भी;राधा कृष्ण प्रकाशन;नई दिल्ली पृ० 160
10. डॉ0. गायकवाड़ क्रान्ति **2016** : समकालानी नारी जीवन और हिन्दी
11. आत्मकथा; अन्नपूर्णा प्रकाशन;कानपुर; पृ0 81
12. डॉ0. खिल्लारे दीपक नामदेव **2016** : हिन्दी की महिला आत्मकथाओं का समाजशास्त्रीय अनुशीलन;अतुल प्रकाशन; कानपुर
13. डॉ0 मीना **2019** : महिला आत्मकथाओं में नारी संवेदना;ए.बी.एल पब्लिकेशन वाराणसी;पृ0 173
14. पुष्पा मौत्रैयी **2008** : गुड़िया भीतर गुड़िया;राजकमल प्रकाशन;नई दिल्ली पृ0 196
15. पुष्पा मैत्रेयी **2002** : कस्तूरी कुण्डल बसै; राजकमल प्रकाशन;नई दिल्ली पृ0 177
16. अग्निहोत्री कृष्णा **2010** : लगता नहीं दिल मेरा;सामयिक बुक्स; नई दिल्ली; पृ077